

DPN 5735

Title: अमोघपाश लोकेश्वरया चारुव / AMOGHAPAS'A LOKE SVORAYĀ
BĀKHAN

Run. No. 6426

Cat. No.

Micro. No.

Subject धार्मिक कहानी Religious narrative Religion: Hindu / Bauddha ✓

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 28.5 x 11.5 Folios 6 Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

कपसाच

ॐ नमः श्रीवक्रमखाय ॥ ॥ सहस्रं नमः सगुणं स्फोटकसमनी मयि न कवकं विनयं ॥ सा
वाह्निं सज्जुमं च कसीहं वामनां द्वांसं नृप नृप निलावर वीमवा ऊरु क्रीक्री निलि
गागल वध्वय नृप आदिनाथ नव प्रथम वीर्य पादु नृप स्व प्रसह ॥ न कवकं विनयं च ना
ग कलुलम । धुने ऊगा इत । अचम्वच द्रव्य नृपला कल पुञ्जलि ध्वद मय्युक्त गुरु स्व
सर्व कपसा मय मर्गाय ।

मसर्वसु श्री श्री

लोकप्रणमय चक्षुमहागामला ककपु श्री दाशक ॥ श्री सर्वसुगुणवद्ध धर्मगुरु श्री जननी देवी
लोकेशिलशान्त्रं प्रमोदगुणसागरं श्रीमिता नृकृतं मोरि नमो मेधमोघपाशकं श्री साक्षात्सम्पन्न
सर्वसुगुणवद्ध वृद्ध धर्मराजसु अगतस सर्वसु श्री साक्षात्सम्पन्न

कपसा मयशान्ति

सर्वसुगुणवद्ध

ॐ नमः श्री गुरु सखाय ॥ नमः च ननु याय ॥ ॥ अथा ॥ कामी हि पाल ॥ स धना च ॥ सुक ॥ उपगु
 फं गुपुनखा ॥ य ॥ पा ॥ रु ॥ क ॥ ना ॥ जी ॥ लि ॥ ॥ ॥ ए ॥ द ॥ क ॥ ॥ तु ॥ मि ॥ च्छ ॥ मि ॥ तु ॥ न ॥ जा ॥ ऊ ॥ म ॥ पा ॥ ष ॥ ध ॥ ॥ न ॥ स ॥ प ॥ र्थ ॥ वि ॥ ध ॥ न ॥
 च ॥ स ॥ र्व ॥ थ ॥ व ॥ कु ॥ म ॥ र्ह ॥ सि ॥ ॥ ॥ ॥ ग ॥ ण ॥ पृ ॥ ष ॥ न ॥ प ॥ द ॥ स ॥ ख ॥ हि ॥ ना ॥ र्थ ॥ च ॥ न ॥ सा ॥ ॥ उप ॥ गु ॥ फ ॥ या ॥ नि ॥ स ॥ न ॥ न ॥ य ॥ नि ॥ न ॥ म ॥
 ला ॥ ष ॥ न ॥ ॥ ॥ ॥ अ ॥ ज ॥ न ॥ म ॥ हो ॥ वि ॥ रु ॥ गु ॥ प ॥ म ॥ य ॥ थ ॥ दि ॥ न ॥ ॥ न ॥ थ ॥ ह ॥ सं ॥ व ॥ व ॥ मि ॥ तु ॥ न ॥ जा ॥ ऊ ॥ म ॥ पा ॥ ष ॥ ध ॥ ॥ ॥
 पू ॥ जा ॥ सो ॥ ए ॥ ग ॥ वा ॥ न ॥ द ॥ ऊ ॥ ॥ स ॥ र्व ॥ रु ॥ ॥ अ ॥ क ॥ क ॥ ली ॥ ॥ क ॥ पि ॥ ला ॥ र ॥ प ॥ च ॥ न ॥ म ॥ य ॥ र ॥ म ॥ ध ॥ ज ॥ म ॥ का ॥ थ ॥ म ॥ ॥ ॥ अ ॥
 ग ॥ गु ॥ स ॥ प ॥ न ॥ ज ॥ ल ॥ ॥ य ॥ म ॥ प ॥ ल ॥ो ॥ दी ॥ ॥ ॥ प ॥ कि ॥ ग ॥ ॥ अ ॥ प ॥ र्थ ॥ य ॥ ॥ प ॥ र्थ ॥ च ॥ अ ॥ रु ॥ ट ॥ स ॥ ॥ ॥ ॥ ना ॥ ना ॥ प ॥ र्थ ॥
 ला ॥ प ॥ न ॥ पो ॥ द ॥ प ॥ ॥ स ॥ म ॥ ल ॥ क ॥ न ॥ ॥ ॥ अ ॥ रु ॥ ट ॥ क ॥ च ॥ दा ॥ ए ॥ म ॥ सि ॥ च ॥ र ॥ मि ॥ ला ॥ न ॥ ल ॥ ॥ ॥ दि ॥ य ॥ च ॥ र ॥ ना ॥ सु ॥ ना ॥ सि ॥
 स ॥ र्व ॥ रु ॥ स ॥ ग ॥ ना ॥ व ॥ रु ॥ ध ॥ र्म ॥ ग ॥ ऊ ॥ न ॥ अ ॥ ग ॥ न ॥ स्ति

सुमाला ॥ पुन ॥ प ॥ व ॥ म ॥ ला ॥ ष ॥ न ॥ ॥ ॥ स ॥ र्व ॥ रु ॥ नि ॥ ध ॥ ज ॥ नी ॥ या ॥ ॥ ठ ॥ न ॥ व ॥ र्ष ॥ ग ॥ न ॥ म ॥ न ॥ ॥ ध ॥ र्म ॥ र्थ ॥ का ॥ म ॥ मा ॥ क ॥ र ॥ ना ॥ प ॥ न ॥
 व ॥ न ॥ च ॥ ॥ ॥ ॥ अ ॥ ग ॥ ण ॥ प ॥ व ॥ च ॥ ॥ अ ॥ र ॥ ता ॥ ए ॥ ग ॥ वा ॥ न ॥ र ॥ म ॥ थ ॥ स ॥ ॥ वा ॥ ण ॥ स ॥ र्थ ॥ नि ॥ ज ॥ र ॥ थ ॥ व ॥ स ॥ म ॥ व ॥ वि ॥
 रु ॥ ॥ ॥ न ॥ र्थ ॥ स ॥ या ॥ वि ॥ प्र ॥ च ॥ पि ॥ न ॥ रु ॥ प ॥ न ॥ ॥ व ॥ र्थ ॥ व ॥ र्ष ॥ ग ॥ न ॥ च ॥ व ॥ म ॥ आ ॥ थ ॥ न ॥ ल ॥ न ॥ ॥ ॥ वा ॥ क ॥
 ना ॥ वा ॥ च ॥ ॥ स ॥ र्व ॥ रु ॥ वि ॥ ध ॥ र ॥ ध ॥ र्म ॥ ना ॥ ऊ ॥ अ ॥ पि ॥ न ॥ र ॥ द ॥ ए ॥ ला ॥ ष ॥ ल ॥ ॥ ॥ न ॥ र ॥ व ॥ न ॥ च ॥ व ॥ न ॥ र ॥ थ ॥ प्रा ॥ प ॥ न ॥ म ॥ या ॥ ॥ ॥
 ए ॥ ग ॥ वा ॥ न ॥ वा ॥ च ॥ ॥ न ॥ र ॥ ल ॥ रु ॥ न ॥ ल ॥ अ ॥ वा ॥ क ॥ सि ॥ य ॥ दि ॥ न ॥ ध ॥ ॥ ॥ म ॥ ना ॥ मा ॥ य ॥ ण ॥ स ॥ ला ॥ क ॥ अ ॥ य ॥ व ॥ न ॥ च ॥ ॥ ॥
 न ॥ र ॥ स ॥ र्व ॥ या ॥ पा ॥ न ॥ अ ॥ य ॥ ॥ स ॥ र्व ॥ रु ॥ न ॥ ॥ ध ॥ र्म ॥ र्थ ॥ का ॥ म ॥ मा ॥ क ॥ र ॥ ना ॥ क ॥ र ॥ ना ॥ प्र ॥ ल ॥ प ॥ ति ॥ ॥ ॥ अ ॥
 द ॥ न ॥ म ॥ नी ॥ रु ॥ स ॥ र ॥ ता ॥ सो ॥ वा ॥ क ॥ र ॥ ॥ अ ॥ न ॥ मा ॥ य ॥ प्र ॥ ता ॥ स ॥ पु ॥ न ॥ प ॥ व ॥ म ॥ ला ॥ ष ॥ न ॥ ॥ ए ॥ ग ॥ न ॥ न ॥ ज ॥ ना ॥ मि ॥

नष्टमिदं कदाचन ॥ ननु न विधानं चरुं चापि कथं वद ॥ ॥ कनकनप्रजापत्यं ननु माचपि न खलु ॥
 नत्सर्वं रगव नमस्तुमादयं समर्हसि ॥ ॥ ननु सर्वप्रतिष्ठावाचयं चापि प्रमादिना ॥ यथाविधिं चापि ॥
 ष्यामलाकं हास्यवर्गां रुमं ॥ ॥ इति न नाथिनें चत्वारं गवान् गेन मस्तु ॥ ॥ इत्युक्तं हास्यं चरुं च न य
 वं नमस्तु वी ॥ ॥ इत्युक्तं हास्यं चरुं च न य ॥ ॥ इति न नाथिनें चत्वारं गवान् गेन मस्तु ॥ ॥ इत्युक्तं हास्यं चरुं च न य
 ल ॥ ॥ गावस्मासायदा सं नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 समासां च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा

नाथिनें च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा
 ॥ ॥ दत्ता कृत्वा च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ नमो लाकं च नत्समां फंकु च सां प्र ॥ ॥ मा

चत्सस्रपायथो ॥ ॥ समपश्यन्मनीन्द्रं गृह्णाकृत्वा प्रदक्षिणं ॥ प्रक्षम्य दक्षिणं पादं त्रिनिषसाद कृत्वा उत्तिष्ठ ॥
 ॥ अथ सोऽगवा दृष्ट्वा न विप्रवृत्तं धात्रिणं ॥ जानन्मपि स्वयं चैव मपृच्छ वृत्तं काचय ॥ ॥ एतद्धि
 कुरुतु नाकनदीर्घास्तस्मै ह्रवानखा ॥ यो यिच्छा कुरुतु गन्धर्वदस्वास्तं काचय ॥ ॥ ह्येनैरुष्ट्रैर्जिन
 द्युषा वागिषा वा जह्नुमः ॥ एगवन् पुनर्नखा कृत्वा कुरुत्वा पूरावदग ॥ ॥ एतेन माहं वृत्तं प्रष्टुमा
 सापवासमाचरे ॥ पुनर्नखा वादीर्घा ननु प्रक्षा कुरुतु चमः ॥ ॥ ह्येनैर्गन्धादिनां ह्रस्वा एगवा व्यम्
 नीष्टवः ॥ न वागिषु द्विजं ह्रस्वः प्रच्छ वृत्तं काचय ॥ ॥ द्विजं कर्नाहं लाघस्य कुरुतु वृत्तं स्वया ॥
 कर्मवर्षाभिर्याना निगत्संयवकुमर्हसि ॥ ॥ ह्येनैर्द्विजैर्मनीन्द्रं ह्रस्वा सोऽगवा व्यम् ॥ एग

[illegible]

गेभममजानमिनभृत्सामिकदाचन ॥ नमद्वगविधानचरुसचापिकथयव ॥ ॥ कनकनपुजायम
 दुग्माचिपकखल ॥ नत्सर्वएगवमकसमादकसमर्हसि ॥ ॥ नत्सर्वप्रतिष्ठेखावयचापिप्रमादिना
 यथाविधिचिपिषामलाकेभस्यप्रकारुम ॥ ॥ कृतिनमार्थिनश्चत्वारंगवानगेभमसुन ॥ दृष्टानस्या
 यशुधपूनपवनमययीन ॥ ॥ ४२ ॥ वाशिष्ठसोधिगुहृत्वाचनसमाहिना ॥ नदिभानरुलचापिकथ
 नगेमगखल ॥ ॥ नायत्मासापदासगत्समाककृत्साप्रन ॥ ननालाकेभजस्येयसम्यगजोधयवग ॥
 मासमासलिनपकृष्टपकृष्टपिवागथा ॥ कृष्टम्यानदुगेकुर्यादायाष्टांगमूपायध ॥ ॥ नीर्धेहानादिक
 कृत्वाधुचिवसावगसर्धी ॥ सर्वसखानुकम्पीचचतुर्वजविहापिक ॥ ॥ दधमकृष्णससत्पकसर्ध

[illegible]

॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥ ॥ ननु नवचंद्रस्व
 सुलरुमिगिगिपजा ॥ नस्माद्वनदुर्गं नृमहत्पुष्पवत्प्रदं ॥ ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 ॥ यस्मादनविनासार्थदानयद्रुगयावता ॥ ॥ मन्त्राभ्यनप्रसिद्धिनिचवाधिददिकवे ॥ ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 सदानिगुमायासंगमूपायधं ॥ ॥ वाधिप्रसिद्धिचिह्ननचपिकसुगुदुध ॥ नस्मादनवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 खेनसमाचय ॥ ॥ नगाहिनिर्मलाह्लावाधिमपिसमापूया ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 नपिच ॥ ॥ स्वस्तिगहिवनवधपुष्पचरस्तिगहवत् ॥ पुष्पधिवस्तिगमापुष्पिडावधिविह
 स्तपू ॥ ॥ मापुष्पधिविहनायसुसमानगर्विगाहवत् ॥ प्रमादाकामपुष्पसुखमसिप्रगिरि

धर्मपजायसः ॥ श्रीमगामापपाहासलाकभयसमकले ॥ ॥ विधिवद्विधिसचपुष्पकृद्विधाननः ॥ ॥
 चत्तनचभंगत्वाकृत्वाचपापदभनो ॥ ॥ पुष्पानुमादनां कुर्याच्चयागुनसुस्तिगो ॥ उपमागुदिककुर्या
 नुगंजापिप्रदक्षिणं ॥ ॥ वाधिचिह्नसमाधयसुखमंशुयादीप ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 ॥ ॥ कुर्यात्पुष्पालनं कुर्यात्पुष्पचक्रं ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 पुष्पप्रमासत्तकुरुनेवाहिवत् ॥ सर्वपापुनपुष्पानां सुखागुविशगिकेत् ॥ ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 नविशगनहि ॥ सर्ववृद्धिजलानां चविनूस्वपिपविशग ॥ ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥
 सर्वरूपपुष्पाभंगसिगुभक्तगवत् ॥ ॥ ननु नवचंद्रस्वार्थकियधिकारिगिनः ॥ नवसर्वपिदवाभ्यलाकणालामहिका ॥

विं संख्यापि विद्यते ॥ ॥ न खेन दुर्गपुष्पना संख्या कर्तुं न भवति ॥ सर्वेषां मीपक तु नां नाम संख्यापि विद्य
 त ॥ ॥ न खेन दुर्गपुष्पना संख्या कर्तुं न भवति ॥ वीहिना मीप सर्वेषां संख्या कर्तुं च भवति ॥ ॥ नुन दुर्ग
 स्पुष्पना संख्या कर्तुं न भवति ॥ ॥ नुन स्पुष्पना प्रमा भवं मया कर्तुं न भवति ॥ ॥ सर्वेषां तु क संख्या जिने
 जयि न भवति ॥ किमव वरुना क नय स्या यम्य न विद्यते ॥ ॥ अप्रमय म संख्य यं पुष्पमिति जगुजिना ॥
 यच्च स्या यद रुन द प्रमय रू लं भवे ॥ ॥ नुन स्पुष्पना नूला व रुखी दु संवा धिमा प्रयात ॥ यच्च स्या यद रुन क र्वि न
 नि प्ररुभ ज सं ग त ॥ ला कं पुं पुं य रु क्त्वा पुं जारो रुदि धन न ॥ ॥ संसर्ष पा य विनि र्मु क्ति नि जा गि सु ख वा सु
 धी ॥ ॥ क्लीना गु भ वान् रुगी सर्वे सम्य सृष्टि मान् ॥ सर्व विद्या कला र्हे ॥ ॥ सर्व भूतान् क या जग ॥ ॥